समाज सेवा के तेजस्वी ऋत्विज—

श्रीगोपालकृष्ण गोखले



लेखक—
श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI PRAVINBHAI PANDYA,
ALINDHRA, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज-सेवा के तेजस्वी ऋत्विज—श्री गोपालकृष्ण गोखले



धर्म के अनेक रूप हैं। जप, तप, उपासना, कर्मकाण्ड—ये सब धर्म के प्रमुख अङ्ग हैं, जिनका पालन भारतीय धर्मानुयायी ही नहीं, संसार की सभी सभ्य जातियों के व्यक्ति अपने-अपने ढङ्ग से करते हैं। मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के लिये साधन स्वरूप ये महत्त्वपूर्ण भी हैं। इनके द्वारा मन की एकाग्रता, ईश्वर पर विश्वास, हृदय की शुद्धता आदि गुणों की प्राप्ति होती है। आगे चल कर इसके परिणाम स्वरूप और भी ऐसी अनेक सत्-प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं जिससे मनुष्य की बाह्य और अन्तरङ्ग उन्नति में सहयोग मिलता है। ये सब गुण मनुष्य को ऊँचा उठाने में, सांसारिक सफलता और प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक अवश्य होते हैं, पर ये उसको अध्यात्म के वास्तविक लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकते। इसका कारण यह है कि ये मस्तिष्क या बुद्धि के क्षेत्र तक ही रह जाते हैं। इन सब गुणों से युक्त मनुष्य स्वार्थी भी हो सकता है। चाहे वह लोक-कथा के अनुसार कुछ दान-दक्षिणा भी दिया करता हो, अपने धन का कुछ अंश सार्वजनिक कार्यों में लगाया करता हो, पर उसका मुख्य लक्ष्य अपनी तथा अपने परिवार की सुख-समृद्धि की वृद्धि करना ही रहता है। ऐसे व्यक्ति को हम सज्जन, समाज का उपयोगी सदस्य कह सकते हैं, वर्तमान समय की मान्यता के अनुसार उसे धार्मिक भी कहा जा सकता है, पर आध्यात्मिक दृष्टि से उसको विशेष महत्त्व नहीं दिया जा सकता।

वास्तव में अध्यात्म शरीर, मन और बुद्धि के क्षेत्र की चीज नहीं वरन् उसका विशेष सम्बन्ध भावना—क्षेत्र से है। आजकल योरोप, अमरीका की भौतिक वादी समाजों में अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने शरीर, मन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुद्धि की दृष्टि से अच्छी प्रगति प्राप्त करली है, पर उनके सभी काम अपने और निकटवर्ती लोगों की सुख-सुविधा की दृष्टि से किए जाते हैं। ऐसे लोग अपने से भिन्न श्रेणी वालों अथवा अन्य देश के निवासियों को सर्वथा गैर समझते हैं और उनके साथ कैसा भी व्यवहार करने में कोई बुराई नहीं मानते। पर एक सच्चा अध्यात्मवादी ऐसा आचरण कभी नहीं करता। वह सभी प्राणियों को एक अदृश्य सूत्र में आबद्ध समझता है और सबके हित में अपना हित अनुभव करता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों की पीड़ा, दुःख देखते ही व्यथित हो जाते हैं और उनसे जितना बन पड़ता है उसे दूर करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार की भावना वाले व्यक्ति ही सेवा-धर्म के अनुयायी हो सकते हैं और उन्हीं से अन्य अनेक व्यक्तियों, प्राणियों का हित-साधन होता है। वे अपने दुःख-सुख, हानि-लाभ की उतनी चिन्ता नहीं रखते जितनी दूसरों के कष्टों और कठिनाइयों की। वे चाहे मन्दिर में बैठ कर ज्यादा-भजन-पूजन न करते हों, चाहे कभी भगवान् के नाम की माला भी न फेरते हों, पर वे वास्तव में प्रभु के प्यारे होते हैं।

श्री गोपालकृष्ण गोखले (जन्म सन् १८६६) सच्चे अर्थों में सेवा-धर्म के व्रती थे। एक गरीब घर में उत्पन्न होकर भी अपनी कर्मठता और परिश्रम के बल पर भारत की सर्वोच्च शासन-सभा के सदस्य के दर्जे तक पहुँच गए थे, पर उन्होंने अपनी उपलब्धियों का उपयोग सदैव पास और दूर के कष्ट पीड़ित लोगों की सहायतार्थ ही किया। यदि कोई अन्य दुनियादर मनुष्य ऐसी पदवी को प्राप्त कर लेता तो सबसे पहले अपने और अपने उत्तराधिकारियों के लिए कोठी और महल खड़े करने तथा भविष्य के लिए एक बड़ी धनराशि इकट्ठी करने का ही उद्योग करता। पर श्री गोखले जीवन के अन्तिम समय तक एक मामूली घर में ही गुजारा करते रहे और इस लोक से विदा होते समय परिवार वालों के लिए नाम मात्र को ही सम्पत्ति छोड़ गए।

आर्थिक कठिनाई में विद्याभ्यास—

उनमें यह भावना आरम्भ से ही पाई जाती थी। उनके पिता की आर्थिक स्थिति उनको उच्च शिक्षा दिलाने लायक नहीं थी। फिर जिस समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री गोखले की आयु १२ वर्ष की थी तभी उनका देहान्त हो गया। इसलिये वे जो कुछ शिक्षा प्राप्त कर सके वह अपने भाई की सहायता से ही सम्भव हो सका। उनके भाई भी पन्द्रह-बीस रुपये मासिक की एक साधारण नौकरी करते थे, पर वे भविष्य की आशा से अपना पेट काटकर गोपालकृष्ण को पढ़ाते रहे। यद्यपि वे कालेज में अपनी प्रतिभा का कोई विशेष परिचय न दे सके, तो भी प्रतिवर्ष उत्तीर्ण होते हुए सन् १८८४ में उन्होंने बी० ए० पास कर लिया।

उन दिनों अंगरेजी शिक्षा का प्रचार आरम्भ ही हुआ था और बी० ए० हो जाना एक बहुत बड़ी बात समझी जाती थी। इसलिये इनके पास हो जाने पर उनके घर वालों को आशा हुई कि अब गोपालकृष्ण किसी अच्छी नौकरी से लग जायें और घर की आर्थिक अवस्था सुधर जायगी। उनमें से किसी ने उनको इञ्जीनियरिंग की और किसी ने वकालत की शिक्षा प्राप्त करने की सलाह दी। कुछ दिन के लिये वे इञ्जीनियरिंग कालेज में गये भी और कुछ दिन कानून की आरम्भिक पुस्तकों का अध्ययन भी किया। पर इनमें से किसी ने उनके हृदय में उत्साह उत्पन्न नहीं किया। कई मित्रों ने उनको यह सलाह भी दी कि वे आई० सी० एस० की परीक्षा में सम्मिलित होकर शासन विभाग में जाने की कोशिश करें। इसमें सन्देह नहीं कि उनमें इतनी परिश्रमशीलता और संलग्नता का गुण था कि वे इनमें से जिस किसी विभाग में जाते उसी में सफलता प्राप्त करके ऊँचे से ऊँचे दर्जे तक पहुँच सकते थे।

पर प्रकृति ने श्री गोखले को इञ्जीनियर, वकील, जज अथवा कलक्टर-कमिश्नर होने को नहीं बनाया था वरन् देश के भाग्य ने उनको ऐसा इञ्जीनियर बनने को भेजा था जिसकी प्रेमपूर्ण देख-रेख में भारतवर्ष की उन्नति के प्रासाद का निर्माण किया जाय। उनको ऐसा वकील बनना था जो भारत, इङ्गलैण्ड की और दक्षिण अफ्रीका की जनता, लोजिस्लेटिव कौंसिल और पार्लीमेंट के सामने पैरवी कर सके। यह एक दैवी विधान ही था जिसने गोखले को एक "इण्डियन सिविल सर्वेण्ट" (आई० सी० एस०) बनने के बजाय बिना कौड़ी-पैसे का 'भारत-सेवक' बना दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दक्षिण एजूकेशन सोसाइटी में प्रवेश—

श्री गोखले जब तक कालेज में पढ़ते थे तब तक सार्वजनिक-जीवन की तरफ उनका विशेष झुकाव देखने में नहीं आया। उस समय वे एक विद्यार्थी की हैसियत से अपना सारा ध्यान पढ़ाई की तरफ ही लगाये हुए थे। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि वे पढ़ने में बहुत तेज अथवा विलक्षण प्रतिभाशाली नहीं थे, इसलिये उन्होंने अपना ध्यान तत्कालीन लक्ष्य पर ही केन्द्रित रखा और बी० ए० की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। पर उनके हृदय में समाज-सेवा का जो बीज विद्यमान था वह उनको किसी लोकोपकारी कार्य में भाग लेने की प्रेरणा भर रहा था और इसके फलस्वरूप लाभदायक सरकारी नौकरियों का मोह त्यागकर वे पूना के 'न्यू इङ्गलिश स्कूल' में ७५ रु० मासिक के अध्यापक बन गये। उस समय सरकार की तरफ से शिक्षा-प्रचार की व्यवस्था बहुत कम थी और वह भी निजी स्वार्थ के दृष्टिकोण से निर्धारित की जाती थी। इसलिये देशभक्तों की यह आकांक्षा थी कि भारतीय युवकों में शिक्षा-प्रचार का कार्य राष्ट्रीय-भावना के लक्ष्य को सिद्ध करने के लिये किया जाय। इन उत्साही विचारकों में से दो प्रमुख विचारक श्री बालगंगाधर तिलक और श्री जी० जी० आगरकर थे। इन दोनों ने अपने कालेज जीवन में ही यह योजना बनाई थी और जब वे विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त करके बाहर निकले तो इसे कार्य रूप में परिणत करने की चेष्टा करने लगे। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री विष्णुशास्त्री चिपलूणकर से मिले और उनके सहयोग से उन्होंने 'न्यू इङ्गलिश स्कूल' की स्थापना की।

श्री चिपलूणकर तो इस स्कूल के खुलने के बहुत थोड़े समय बाद ही स्वर्गवासी हो गये। पर इस कार्य की महत्ता को समझकर अन्य कितने ही सुयोग्य कार्यकर्ता उसमें भाग लेने लग गये और कुछ ही समय में उसने इतनी सफलता प्राप्त कर ली जिसकी आशा नहीं थी। इससे उत्साहित होकर उन्होंने स्कूल को 'फर्गुसन कालेज' के रूप में परिवर्तित करने और उसकी व्यवस्था के लिये 'दक्षिण एजूकेशन सोसाइटी' स्थापित करने का निश्चय किया और उसमें भाग लेने के लिये समाजसेवी उत्साही युवकों का आह्वान किया गया। यह तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हम नहीं कह सकते कि श्री गोखले का प्रथम परिचय सोसाइटी के सञ्चालकों से कैसे हुआ ? पर सन् १८८५ में वे इस संस्था में सम्मिलित हो गये और इसके साथ ही उनकी धन कमाने अथवा 'बड़े' आदमी बनने की समस्त सम्भावनाओं का अन्त हो गया। यह निर्णय एक ऐसे नवयुवक के लिये जिसने बड़ी कठिनाइयों से विद्या पढ़ी हो और जिसके घर वाले यह आशा लगाये हों कि जब ये कमाने लगेंगे तो हमारी अब तक की तमाम कठिनाइयों का अन्त हो जायगा, निस्सन्देह ही एक बड़े त्याग और बलिदान के तुल्य था, क्योंकि इसमें उनको ७५) रु० मात्र निर्वाह के लिये मिलते थे।

इस संस्था में जितने लोग सम्मिलित हुए वे सब इतनी योग्यता वाले थे कि अगर सरकारी नौकरी या किसी अन्य स्वतन्त्र रोजगार में लगते तो बहुत धन और पदवी प्राप्त कर सकते थे। इस संस्था के प्रत्येक जीवन-सदस्य ने बीस साल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा की थी। यद्यपि अन्य कई सदस्य परिस्थितियों-वश इस प्रतिज्ञा को पूरी नहीं कर सके, पर श्री गोखले प्रान्तीय और केन्द्रीय कौंसिलों के सदस्य निर्वाचित कर लिये जाने के बाद भी इस कार्य को यथाशक्ति करते रहे और उन्होंने कालेज को सन् १९०४ में सम्मानपूर्वक छोड़ा। कालेज में यद्यपि उनको मुख्यतया अँगरेजी का प्रोफेसर नियुक्त किया गया था, पर आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने कई वर्ष तक गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र का अध्यापन भी किया। यद्यपि स्कूल में पढ़ते समय वे गणित में कोई विशेषता नहीं रखते थे, पर जब उनको अपने कालेज में गणित पढ़ाने का काम करना पड़ा तो उन्होंने निजी तौर पर अध्ययन करके इतनी योग्यता प्राप्त कर ली कि 'अर्थमेटिक' की एक बहुत बढ़िया पुस्तक लिखकर तैयार कर दी जो समस्त महाराष्ट्र के स्कूलों में ऐसी पसन्द की गई कि उसके पचासों संस्करण छप गये और लाखों कापियाँ बिक गईं।

गणित के अध्ययन से श्री गोखले को यह लाभ हुआ कि अपने राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में उन्होंने जो भाषण दिये उनमें प्रत्येक विषय के आँकड़े इतने प्रामाणिक ढङ्ग से और स्पष्ट रूप में दिये जाते थे कि उनको कोई काट नहीं सकता था। इसी कारण गवर्नर जनरल की कौंसिल में उनके 'बजट'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धी भाषण बड़े महत्त्व की निगाह से देखे जाते थे और अँगरेज अधिकारी भी उनका उत्तर देने में घबड़ाते थे। एक बार लार्ड किचनर ने, जो उस समय भारत के प्रधान सेनापति थे, उनसे निजी तौर पर पूछा कि वे 'बजट' के भाषण में फौजी.खर्च के सम्बन्ध में किन मुख्य बातों पर ऐतराज उठाना चाहते हैं? लार्ड किचनर एक 'सिपाही' थे और कौंसिलों में वाद-विवाद करने का उनको ज्यादा अभ्यास नहीं था। इसलिये वे पहले से ही श्री गोखले के ऐतराजों को जान लेना चाहते थे जिससे समय रहते अपने सेक्रेटरियों से उनका समाधानकारक उत्तर तैयार करा सकें।

शिक्षा प्रचार में सहयोग—

श्री गोखले केवल कालेज में विद्यार्थियों को पढ़ाने का ही काम नहीं करते थे, वरन् समस्त कालेज और 'दक्षिण एजूकेशन सोसाइटी' की व्यवस्था में भी उनको बहुत ध्यान देना पड़ता था। श्री तिलक और नाम जोशी आदि कई सदस्य सन् १८९० में ही कुछ मतभेदों के कारण संस्था से पृथक हो गये थे और उसके पश्चात् उसका अधिक भार श्री गोखले को ही उठाना पड़ा। सन् १८९२ में कालेज की नई इमारत का निर्माण आरम्भ हुआ तो उसके लिये चंदा इकट्ठा करने का काम भी इनको ही करना पड़ा। ये चार-पाँच दिन तो कालेज में पढ़ाते थे और सप्ताह के अन्त में प्रचार के लिये बम्बई या अन्य नगरों में चले जाते थे। परिणाम यह हुआ कि सन् १८९५ में जब इमारत बनकर पूरी हुई तो उस पर एक पैसा भी किसी को देने का शेष नहीं था। इस कार्य में श्री गोखले को बहुत अधिक अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ा, पर उनकी योग्यता और ईमानदारी की लोगों पर ऐसी छाप पड़ गई कि आगे चलकर दक्षिण अफ्रीका के लिये और अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए धन संग्रह करने में उनको कोई कठिनाई नहीं हुई।

अपने विद्यार्थियों के साथ श्री गोखले का व्यवहार बड़ी सहानुभूति और स्पष्टता का रहता था। वे उनको इस बात के लिये उत्साहित करते थे कि विद्यार्थीगण अपनी आवश्यकताओं और कठिनाइयों को उनसे साफ-साफ कहें। वे निजी तौर पर भी विद्यार्थियों की जो कुछ सहायता सम्भव हो सकती थी उंसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने को तैयार रहते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके विद्यार्थियों में से बहुसंख्यक आगे चलकर सार्वजनिक जीवन में भी उनके सहयोगी बने रहे। उन्होंने अनेक होनहार और प्रतिभाशाली युवकों को प्रेरणा देकर 'दक्षिण एजूकेशन सोसाइटी' का जीवन-सदस्य बनाया और उनको देश-सेवा के मार्ग पर लगाया। वे इस काम को बिना किसी प्रकार का अनुचित दबाव डाले अथवा इधर-उधर की बातों से किसी को बहकाये खूब समझा-बुझाकर करते थे। इससे 'सोसाइटी' को सुयोग्य कार्यकर्ता मिलते रहे और 'फर्गुसन कालेज' देश की एक प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था बन गया जो अभी तक सुदृढ़ आधार पर शिक्षा-प्रचार का काम करता जा रहा है।

शिक्षा-प्रचार के कार्य से श्री गोखले को इतना अनुराग था कि पूना की प्रायः सभी शिक्षा-संस्थाओं को वे किसी न किसी रूप में सहयोग देते रहते थे। अपने इसी गुण के कारण उनको 'ग्रेजुएटों' की तरफ से १८९५ में ही बम्बई विश्वविद्यालय के "फैलो' चुना गया और वे अपने जीवन के अन्तिम समय उस उत्तरदायित्व का निर्वाह परिश्रमपूर्वक करते रहे। वे सीनेट के भी सदस्य चुने गये और जब अवसर पाते थे तो अवश्य वहाँ जाकर शिक्षा सम्बन्धी सुधारों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण सुझाव देते थे। वे बहुत वर्षों तक विश्वविद्यालय में अँगरेजी और इतिहास के परीक्षक भी रहे थे।

जिस समय लार्ड कर्जन इस देश के गवर्नर जनरल थे, उनकी सदैव यही चेष्टा रहती थी कि जहाँ तक सम्भव हो भारतवासियों को कम से कम अधिकार दिये जायें। इतना ही नहीं वे अब तक मिले हुए अधिकारों को भी कम करने का प्रयत्न करते रहते थे। उन्होंने एक यूनीवर्सिटी कमीशन कायम की और उसकी रिपोर्ट के आधार पर एक नया कानून कौंसिल में पेश कराया, जिसका मूल उद्देश्य विश्वविद्यालयों के प्रबन्ध में से 'फैलो'-गण का जोर कम करना और विश्वविद्यालयों की व्यवस्था मुख्यतया सरकार के ही हाथ में देना था। श्री गोखले ने इस बिल का बड़े जोर-शोर से विरोध किया और अपनी शिक्षा सम्बन्धी जानकारी के आधार पर सरकारी दलीलों का अच्छी तरह खण्डन कर दिया। सरकार ने अपना उद्देश्य यह बतलाया कि शिक्षा का स्तर ऊँचा किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाय, चाहे इसके परिणाम स्वरूप छात्रों की संख्या घट क्यों न जाय। इस विषय में बहस करते हुए श्री गोखले ने कहा—

"शिक्षा के स्तर को उच्च बनाना बहुत आवश्यक और लाभकारी है, पर इस सम्बन्ध में कोई ऐसे नियम बनाना जिससे छात्रों की संख्या घटे ठीक न होगा। भारतवर्ष की इस समय जैसी स्थिति है, उसमें सब प्रकार का आधुनिक शिक्षण लाभदायक ही सिद्ध होगा, चाहे वह कुछ हलके स्तर का ही क्यों न हो। मेरा विश्वास है कि हमारा सार्वजनिक जीवन, वह चाहे राजनीतिक, सामाजिक, औद्योगिक अथवा शैक्षणिक—किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित क्यों न हो, सब एक ही उद्देश्य पर केन्द्रित होता है। किसी एक विशेष क्षेत्र में तब तक अधिक उन्नति करने का कोई महत्त्व नहीं जब तक कि भारतीय-जनता सब क्षेत्रों में समान रूप से आगे न बढ़े। मैं कहना चाहता हूँ कि इस समय भारत-वर्ष पश्चिमी शिक्षा का उद्देश्य केवल साहित्यिक ज्ञान को प्रोत्साहन देना नहीं है, वरन् यहाँ निवासियों के मस्तिष्कों में भरे समय के प्रतिकूल पुराने विचारों को निकालना और उनके स्थान में पश्चिमी जगत् के जीवन में जो कुछ उच्च और श्रेष्ठ है, उसे सम्मिलित करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये केवल उच्चस्तर की शिक्षा का ही फैलाया जाना आवश्यक नहीं है वरन् साधारण स्तर की शिक्षा भी अधिक से अधिक फैलाई जानी चाहिए।"

पत्र सम्पादन और समाज-सुधार—

समाज-सुधार के सम्बन्ध में भी श्री गोखले के विचार आरम्भ से ही प्रगतिशील थे और जब सन् १८८९ में श्री आगरकर ने 'सुधारक' नामका पत्र मराठी और अङ्गरेजी में निकाला तो श्री गोखले भी उसमें शामिल हो गये। इसमें मराठी वाला भाग श्री आगरकर लिखते थे और अंगरेजी वाला श्री गोखले। वैसे वे मराठी के भी बहुत अच्छे लेखक थे और उन्होंने किसी समय तरङ्ग उठने पर शिवाजी के सम्बन्ध में एक मनोरञ्जक उपन्यास लिखा था। पर अधिकांश में उनके सभी लेख और भाषण अँगरेजी में ही लिखे जाते थे। 'सुधारक' के लेखों में प्रायः भारतीय-समाज में फैले हुए दोषों पर प्रकाश डाला जाता था और उनको दूर करने पर जोर दिया जाता था। जिस प्रकार अनेक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजनीतिज्ञ लोकप्रियता प्राप्त करने के उद्देश्य से जनता की प्रायः प्रशंसा ही किया करते हैं और उनके समस्त कष्टों और कठिनाइयों का दोषारोपण सरकार पर किया करते हैं, वह नीति 'सुधारक' की नहीं थी तो भी जनता में इस पत्र का अच्छा प्रचार हुआ और प्रथम वर्ष में ही वह स्वावलम्बी बन गया। पर श्री गोखले पर शिक्षा-संस्थाओं तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों का भार इतना अधिक था कि वे इस कार्य में अधिक समय नहीं दे सकते थे और तीन-चार वर्ष बाद उन्होंने 'सुधारक' का सम्पादन कार्य छोड़ दिया। वैसे उनको अखबारों के पढ़ने का बहुत अधिक शौक था और कभी-कभी वे किसी अङ्गरेजी मासिक पत्र में एकाध लेख भी दे देते थे। पर समयाभाव से वे इस दिशा में अधिक प्रगति नहीं कर सके।

समाज-सुधार के कार्य में यद्यपि श्री गोखले कभी अग्रणी नहीं बने, तो भी उनकी सहानुभूति सदा इस प्रकार के कार्यों से बनी रही। उनका ध्यान सबसे अधिक अछूतों और दलित जातियों के साथ किये जाने वाले अन्याय-युक्त व्यवहार की तरफ जाता था। इस सम्बन्ध में उनकी भावनायें बड़ी प्रबल थीं और वे कहते थे कि "एक तरफ तो हम दक्षिण अफरीका के गोरों द्वारा भारतवासियों के साथ भेदभावपूर्ण ओछा व्यवहार करने की शिकायत करते हैं, अपने शासकों के सामने 'समानता' का अधिकार दिये जाने का दावा पेश करते हैं और दूसरी तरफ अपने ही समाज के एक बड़े अङ्ग—'अछूतों' के साथ इस प्रकार का अमानवीय तथा गर्हित व्यवहार करते हैं, तो हमारी बात का क्या महत्त्व हो सकता है ?"

इसी प्रकार जब पूना में कुछ ब्राह्मण जातीय व्यक्तियों ने एक ईसाई-मिशन के उत्सव में चाय पी ली और पुराणपंथी लोगों ने इसके खिलाफ जाति-बहिष्कार का शोर मचाया तो श्री गोखले ने उसकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं, जब इसी घटना के फल स्वरूप श्री रानाडे, कुछ मित्रों के दबाव में आकर प्रायश्चित करने को तैयार हो गये, तो श्री गोखले ने उनको ऐसा न करने के लिए समझाया और कहा कि उनके प्रायश्चित करने का प्रभाव समाज-सुधार के कार्य के लिए हानिकारक होगा। पर उनके ऊपर राज-नीतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और शिक्षा सम्बन्धी कार्यों का भार सदैव इतना अधिक रहा कि वे समाज-सुधार के कार्यों में क्रियात्मक भाग बहुत थोड़ा ही ले सके ।"

सार्वजनिक सभा और श्री रानाडे से सम्पर्क—

सच्चे अर्थों में श्री गोखले का राजनीतिक जीवन 'सार्वजनिक सभा' में सम्मिलित होने के पश्चात् आरम्भ हुआ । इस संस्था के मुख्य संचालक और मार्ग-दर्शक श्री रानाडे थे, यद्यपि सरकारी नौकर होने के कारण वे उसमें खुल-कर भाग नहीं लेते थे । जब प्रथमबार कुछ लोगों ने श्री रानाडे से गोखले को सभा का मन्त्री बनाने का प्रस्ताव किया तो उन्होंने परीक्षा के तौर पर उनको एक सरकारी रिपोर्ट देकर उसका सारांश एक लेख के रूप में तैयार करने को कहा । जब श्री गोखले का लेख उनको पसन्द आ गया तो ये सभा का कार्य करने लगे और तीन-चार साल तक उसका सञ्चालन ऐसी योग्यता से किया कि अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों की उसके द्वारा पूर्ति हो सकी ।

इस सभा का मुख्य कार्य सार्वजनिक हित की सरकारी योजनाओं के सम्बन्ध में जनता का मत प्रकट करना था । इसके लिये इसकी तरफ से बहुत विचारपूर्ण और गम्भीर 'मेमोरियल' (स्मरण-पत्र) तैयार करके सरकारी अधिकारियों के पास भेजे जाते थे । यद्यपि इनकी प्रेरणा देने वाले श्री रानाडे ही थे पर समस्त कार्य श्री गोखले को ही करना पड़ता था । यह समय उनके जीवन में एक प्रकार से 'राजनीतिक प्रशिक्षण' प्राप्त करने का था । इसी कार्य को करते हुए उनको सार्वजनिक प्रश्नों पर सब पहलुओं से विचार करके ठीक-ठीक निष्कर्ष निकालने की आदत पड़ी । साथ ही श्री रानाडे जैसे अनुभवी और उदार विचारों के व्यक्ति से मार्ग-दर्शन प्राप्त करने का सुयोग भी था । इससे उनको यह अनुभव हुआ कि सार्वजनिक कार्यों में केवल 'गर्मागर्म और जोरदार' भाषण करने से कोई विशेष लाभ प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक कि वह ठोस आधार और तथ्यों पर आधारित न हो । श्री गोखले सरकार के पास जितने 'स्मरण-पत्र' भेजते थे वे इतने गम्भीर और साथ ही संयत भाषा में लिखे होते थे कि सरकारी अधिकारी उन पर पूरा ध्यान देते थे और उत्तर में लम्बे-लम्बे पत्र लिखकर भेजते थे । इस प्रकार श्री गोखले अनेक जन-हितकारी कार्यों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूर्ति करा सके और आगे चल कर बड़े-बड़े कार्यों को कर सकने का अनुभव प्राप्त हो सका।

सन् १८९६ में इङ्गलैंड की सरकार ने एक कमीशन इसलिये नियत किया कि वह भारत वर्ष की आर्थिक-व्यवस्था के सम्बन्ध में आवश्यक सुधारों पर विचार करे और साथ ही यह भी जाँच करे कि क्या इस समय भारत को कुछ ऐसे खर्च भी करने पड़ रहे हैं, जो वास्तव में इङ्गलैण्ड की सरकार को करने चाहिये ? 'दक्षिण सभा' की तरफ से श्री गोखले को इस कमीशन के सामने गवाही देने इङ्गलैण्ड भेजा गया और उनकी गवाही भारतीय दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण समझी गई। उन्होंने अपना बयान ऐसे ठोस आधार पर और सही आँकड़ों के साथ तैयार किया था कि जब कमीशन के सदस्यों ने उनसे जिरह की तो उन्होंने सब प्रश्नों के उत्तर बड़ी योग्यता पूर्वक दिये। यद्यपि इस कमीशन की रिपोर्ट दो वर्ष बाद प्रकाशित हुई जिससे जनता को उसके विषय में कोई उत्साह न रहा, पर उस अवसर पर श्री गोखले ने जो कार्य किया वह लोगों को बहुत समय तक याद बना रहा।

पूना के उपद्रव और श्री गोखले की क्षमा प्रार्थना—

जिस समय श्री गोखले इङ्गलैंड में कमीशन के सामने गवाही दे रहे थे उसी समय पूना में प्लेग की महामारी फैली और उसके कारण नगर में इतनी अधिक हलचल मच गई जिसने एक बड़े उपद्रव का रूप धारण कर लिया। इन उपद्रवों में किसी उग्र क्रान्तिवादी ने दो अङ्गरेज अफसरों को गोली से मार दिया। इस घटना से इङ्गलैंड में भी बड़ी सनसनी फैल गई और वहाँ के अखबार भारत में कड़े से कड़े दमनकारी उपायों से काम लेने का आन्दोलन उठाने लगे। श्री गोखले के मित्र उनको प्रत्येक सप्ताह पत्र भेजते रहते थे जिनमें उपद्रव सम्बन्धी खबरें और बाजार की अफवाहों का भी समावेश रहता था और उन पत्रों से श्री गोखले को यह जान पड़ा कि प्लेग के सबन्ध में काम करने वाले योरोपियन सिपाहियों के आपत्तिजनक व्यवहार से उपद्रव विशेष रूप से भड़के थे। उन्होंने यह बात अपने एक भाषण में प्रकट भी कर दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब वे भारत लौट कर आये और उनसे योरोपियन सिपाहियों के संबंध में किये गये आक्षेपों का प्रमाण माँगा गया तो उनको मालूम हुआ कि उनके मित्रों ने जो बातें लिखी थीं उनमें अतिशयोक्ति थी। अब वे मित्र भी सामने आने से इनकार कर रहे थे। यद्यपि इस विषय में योरोपियन सिपाहियों द्वारा कानूनी कार्यवाही किये जाने की जरा भी सम्भावना न थी तो भी श्री गोखले ने नैतिक दृष्टि से अपनी भूल स्वीकार करके उसके लिये क्षमा माँग ली। उनके कुछ विरोधियों ने इस बात को लेकर बड़ा शोर मचाया और उनके कार्य को भारतीय जनता के विरुद्ध बतलाकर तरह-तरह के आक्षेप किये। यह एक ऐसी घटना थी जिससे उनका सार्वजनिक जीवन सदा के लिये समाप्त हो सकता था। पर उन्होंने जो कुछ किया ईमानदारी और सचाई की भावना से था इसलिये वे शान्त बने रहे और कुछ समय बाद लोगों ने भी वास्तविक तथ्य को समझ कर इस घटना को भुला दिया।

इतना ही नहीं कुछ समय पश्चात् श्री गोखले ने प्लेग पीड़ितों की सहायतार्थ एक स्वयंसेवक दल संगठित किया और उनके साथ स्वयं जाकर सैकड़ों असहाय व्यक्तियों की प्राण रक्षा की। सरकारी अधिकारियों ने भी उनके इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की और एक वर्ष बाद जब प्लेग की बीमारी और उसके निवारण के उपायों पर विचार करने को एक कमीशन बैठाया गया तो श्री गोखले को भी उसका सदस्य नियत किया गया। प्लेग-सम्बन्धी इस तमाम मामले में श्री गोखले का जो भाग रहा उस पर विचार करने से यह प्रतीत होता है कि विवादग्रस्त सार्वजनिक विषयों के सम्बन्ध में कोई भी मत बहुत सोच विचार कर और जाँच करके ही प्रकट करना चाहिये और आवश्यकता पड़े तो सत्य की रक्षा के लिये अपनी भूल को स्वीकार कर लेने में हिचकिचाना न चाहिये। इससे थोड़ी बहुत सामयिक हानि हो सकती है, पर 'साँच को आँच कहाँ' के अनुसार अन्त में लोग उसके महत्त्व को समझते और स्वीकार करते ही हैं।

म्यूनिसिपैलिटी और व्यवस्थापिका सभा—

श्री गोखले का विश्वास था कि अगर किसी व्यक्ति को देश के राजनै-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तिक क्षेत्र में काम करना हो तो उसे पहले नागरिक प्रशासन में भाग लेकर कुछ अनुभव प्राप्त कर लेना चाहिये। जो व्यक्ति सार्वजनिक कार्यों का कुछ भी क्रियात्मक अनुभव लिये बिना राजनीति में कूद पड़ते हैं वे कभी जनता की ठोस सेवा नहीं कर सकते। इसलिए जब उनके सामने इस प्रकार के कर्य का अवसर आया तो उन्होंने पूना की म्यूनिसपैलिटी और बम्बई प्रान्तीय कौंसिल के कार्यों में भाग लिया और उनके द्वारा जनता की जो कुछ सेवा हो सकती थी वह बड़े अच्छे ढङ्ग से की। वे सन् १८९९ में प्रथम बार 'बम्बई लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य चुने गये और वहाँ पहुँचकर उन्होंने लोक-कल्याण के कार्यों में जिस आन्तरिक निष्ठा का परिचय दिया उससे वे जनता के श्रद्धाभाजन बन गये और जीवन के अन्त तक प्रान्तीय अथवा केन्द्रीय शासन सभा में प्रजा-प्रतिनिधि के रूप में बने रहे।

बम्बई की प्रान्तीय सभा के सदस्य वे केवल दो वर्ष रहे, पर इसी बीच में उन्होंने इतना महत्त्वपूर्ण कार्य किया कि सन् १९०१ में उनको बम्बई प्रान्त के प्रतिनिधि के रूप में इम्पीरियल कौंसिल (केन्द्रीय शासन-सभा) में भेज दिया गया। जिस समय वे बम्बई की प्रान्तीय शासन-सभा के सदस्य थे उस समय उसके सामने दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पेश हुए। एक था 'डिस्ट्रिक्ट म्युनिसिपल एक्ट' में शंशोधन करने का और दूसरा था 'लैण्ड रैवेन्यू कोड' (मालगुजारी के नियम) में सुधार करने का। श्री गोखले कई वर्ष तक पूना म्युनिसपैलिटी के सदस्य रह चुके थे और उसकी कार्यवाही का उनको व्यवहारिक अनुभव था, इसलिये उन्होंने प्रथम 'बिल' के वाद-विवाद में प्रमुख भाग लिया।

इसके पश्चात् सन् १९०५ में उनको पूना म्युनिसपैलिटी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया तो उन्होंने दो-तीन वर्ष के भीतर उसकी व्यवस्था में बहुत से नये सुधार कर दिये। उनके सामने म्यूनिसपैलिटी की मीटिंगों का कार्य ठीक समय पर और बड़ी मुस्तैदी से किया जाता था, जिससे कुछ सदस्यों को असुविधा भी अनुभव होती थी' क्योंकि इससे पहले वे आराम के साथ ढीले-ढाले-ढङ्ग से कार्य करने के अभ्यस्त थे। उन्होंने मीटिङ्गों में मैम्बरों द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

म्युनिसपैलिटी के वेतनभोगी कार्यकर्ताओं से प्रश्न पूछने की प्रथा भी जारी की। यह भी नियम बना दिया गया कि मीटिङ्ग में जिन विषयों पर विचार किया जाना है उनकी सूचना पहले से छपवा कर मेम्बरों को भेज दी जाया करे। दो वर्ष पश्चात् उन्होने स्वयम् ही अध्यक्ष के पद को छोड़ दिया क्योंकि उनको अब अन्य सार्वजनिक कार्यों में अधिक समय देने की आवश्यकता जान पड़ने लगी। पर उन्होंने अपने उदाहरण से यह बात प्रकट कर दी कि जो लोग राजनीति में भाग लेना चाहें उनको स्थानीय शासन संस्थाओं में भाग लेकर जन-सेवा के कार्यों का कुछ अनुभव अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

केन्द्रीय सभा में बजट के भाषण—

सन् १९०१ में श्री फीरोज शाह मेहता ने केन्द्रीय सभा की सदस्यता को छोड़ने की इच्छा प्रकट की और उनके स्थान पर श्री गोखले को सर्व सम्मति से चुनकर भेजा गया। उस समय से १९१५ में देहान्त होने तक वे कौंसिल के एक प्रधान और योग्य मेम्बर माने गये। अनेक लोग उनको 'विरोधी पार्टी का नेता' कहते थे, पर श्री गोखले ने कभी केवल विरोध करने के भाव से इस कार्य को नहीं किया। वे प्रत्येक विषय पर भारतीय दृष्टिकोण को सरकार के सामने उपस्थित किया करते थे। प्रतिवर्ष बजट (राष्ट्रीय आय-व्यय) के सम्बन्ध में उनका भाषण ऐसा तथ्यपूर्ण और गम्भीर होता था कि सब लोग उत्सुकतापूर्वक उसकी राह देखा करते थे। वह मित्रों के लिये प्रसन्नता और उत्साह का कारण होता था और विरोधियों के लिये भय का।

वे हमेशा सरकारी खर्चों में किफायत—शरीर पर जोर देते थे जिससे जनता पर करों का भार अधिक न पड़े। इसलिये वे रेलवे आदि पर अन्धाधुन्ध खर्च का विरोध करते थे और जहाँ तक सम्भव हो देश में प्राप्त साधनों से ही काम लेने पर जोर देते थे जिससे खर्च में कमी हो सके। वे भारतवासियों की इस माँग का भी समर्थन करते थे कि देश की आर्थिक व्यवस्था में भाग लेने का उनको पूरा मौका दिया जाय। देश की आय में से जो बचत होती थी, उसको वे मुख्यत: शिक्षा-प्रचार और स्वच्छता तथा स्वास्थ्य रक्षा के कार्यक्रमों में खर्च करने की सम्मति देते थे। वे भारतीय उद्योग-धन्धों की रक्षा के लिये विदेशी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माल पर टैक्स लगाने पर जोर देते थे। अँगरेजों की तरफ से भी यह प्रस्ताव किया जाता था कि नवीन उद्योग-धन्धों की रक्षा के लिये ऐसा संरक्षण-टैक्स लगाया जाना चाहिये। पर श्री गोखले उनकी नीति को समझते थे। उनका आशय मुख्यत: उन्हीं उद्योगधन्धों से था जो अधिकाँश में योरोपियन लोगों के हाथ में थे। इसलिये वे हमेशा भारत-वासियों द्वारा संचालित उद्योग-धन्धों के पक्ष को विशेष जोर के साथ उपस्थित किया करते थे। वे गरीबों के हित की दृष्टि से नमक के टैक्स को घटाने और उसकी कमी इनकमटैक्स से पूरी करने का समर्थ न करते थे।

वे कहते थे कि यह सरकार की एक चाल है कि जहाँ एक ओर देश में अकाल और दरिद्रता बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी ओर देश के सरकारी आय-व्यय में बचत दिखाई जाती है। उन्होंने इसका रहस्य यह बतलाया है कि सरकार ने भारत की मुद्रानीति (करसी पालिसी) को इङ्गलैण्ड के 'गोल्ड-स्टैण्डर्ड' से सम्बद्ध कर दिया है जिसके फलस्वरूप जनता को उसकी कीमत चाँदी के वास्तविक मूल्य की अपेक्षा अधिक देनी पड़ती है। वही मुनाफा सरकारी बजट में बचत के रूप में दिखा दिया जाता है। इस दृष्टि से यह बचत वास्तव में जनता का धन है जिसे जनता के हित में ही लगाया जाना चाहिये। इस तरह गोखले अपनी अर्थ विज्ञान संबंधी योग्यता का पूर्ण रूप से जनता के हित-संरक्षण में उपयोग किया करते थे। उनकी इस विषय की योग्यता इतनी बढ़ी-चढ़ी थी कि यदि वह किसी स्वतंत्र देश में होते तो वहाँ के बहुत सफल 'अर्थ-मन्त्री' बन सकते थे।

यूनीवर्सिटी बिल—

जैसा पहले कहा जा चुका है भारतवर्ष की उच्च शिक्षानीति के सम्बन्ध में जाँच करने के लिये लार्ड कर्जन ने एक यूनीवर्सिटी कमीशन' नियत किया था, जिसकी रिपोर्ट के आधार पर एक 'यूनीवर्सिटी बिल' तैयार करके व्यवस्थापिका सभा में पेश किया गया। इस बिल का उद्देश्य यूनीवर्सिटी के सदस्यों की संख्या घटाकर उसका नियन्त्रण मुख्य रूप से सरकार के हाथ में दे देना था। इस अवसर पर भाषण करते हुए श्री गोखले ने कहा— 'सरकार को यह नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझना चाहिये कि कालेजों की शिक्षा यदि बहुत ऊँचे दर्जे की होगी तो वह अनुपयोगी अथवा दोषयुक्त हो जायगी। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में इस देश की जो स्थिति है उसे देखते हुए अगर विद्यार्थी कुछ कम स्तर की शिक्षा भी प्राप्त कर सकें तो वह भी लाभकारक ही होगी। मेरा विश्वास है कि जन-जीवन से सम्बन्धित, राजनैतिक, सामाजिक, औद्योगिक कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, सब में समान रूप से प्रगति होना आवश्यक है। देश की वर्तमान परिस्थिति हमको इस बात की आवश्यकता प्रतीत होती है कि पश्चिमी देशों ने जीवन को उच्च बनाने के लिए जिन विधियों और मार्गों को खोज निकाला है, उनका ज्ञान भारतवासियों को भी प्राप्त होने लगे।" यद्यपि सरकार के प्रभाव से यूनीवर्सिटी बिल जैसे का तैसा पास हो गया पर उसने श्री गोखले का कथन स्वीकार कर लिया कि "शिक्षा की उन्नति उसके लिये अधिक धन व्यय करने पर ही हो सकती है, केवल कानून बना देने से कोई काम नहीं चल सकता। आगामी वर्षों में सरकार ने इसके अनुसार शिक्षा प्रचार में पर्याप्त धन-राशि खर्च की और उससे इस देश के विद्यार्थियों ने बहुत कुछ लाभ उठाया।

सन् १९०४ के अन्त में गोखले जी ने दक्खिन एजूकेशन सोसायटी' को छोड़ दिया। इस समय उनको उसके सम्पर्क में आये हुए पूरे २५ वर्ष हो चुके थे और इतने ही समय उसमें काम करने की प्रतिज्ञा की गई थी। वैसे वे विद्यार्थियों की पढ़ाई कार्य सन् १९०२ से ही बन्द कर चुके थे और सब दो वर्ष से छुट्टी पर थे। कालेज को छोड़ते समय समस्त छात्रों ने इकट्ठे होकर उनको एक अभिनन्दन पत्र भेंट किया। उसका उत्तर देते हुए श्री गोखले का हृदय भर आया। उन्होंने कहा कि "इस काम को छोड़ते हुए मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैं अपने जीवन के सर्वोत्तम कार्य को छोड़े जा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि मैं आगे चलकर तुम में से कितनों के ही साथ सहकारी के रूप में मिलूँगा।"

बनारस कांग्रेस की अध्यक्षता--

सन् १९०५ में श्री गोखले को राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया जो उस समय एक गैर सरकारी भारतवासी के लिये सर्वोच्च सम्मान का चिन्ह था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारतीय राजनीति में आगे चलकर गरम और नरम दल का जो भेद उत्तेजना पूर्ण रूप में प्रकट हुआ था, वह बनारस कांग्रेस के अवसर पर थोड़ा-थोड़ा दिखाई पड़ने लग गया था। तो भी निस्स्वार्थ भाव से देश-सेवा करने के कारण उनके चुनाव का किसी ने खुलकर विरोध नहीं किया। लार्ड कर्जन का प्रतिगामी शासन उसी समय समाप्त हुआ था और इंगलैण्ड में उदार दल का शासन स्थापित हो चुका था जिससे भारत को सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की आशा थी। श्री गोखले ने अपने भाषण में स्पष्टतया कहा कि "कांग्रेस का लक्ष्य भारतवर्ष के लिये वैसा ही शासन स्थापित करना है जैसा कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य स्वशासित उपनिवेशों को प्राप्त है।" उन्होंने स्वीकार किया कि इस दिशा में प्रगति धीरे-धीरे होगी और सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इस लक्ष्य को दृष्टिगोचर रखकर लोगों को क्रमशः शासन सम्बन्धी उत्तरदायित्व सौंपती चली जाय। इस प्रकार श्री गोखले जहाँ ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रति विद्रोह की भावना रखने के विरुद्ध थे उसी प्रकार वे भारत पर नौकरशाही द्वारा मनमाने ढङ्ग से शासन करने की भी आलोचना करते थे। यद्यपि अन्य प्रकार के विचार रखने वाले भारतीय नेताओं ने गोखले जी के इन विचारों का विरोध किया और उनको सरकार की खुशामद करने वाला बतलाया, पर इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने जो कुछ कहा उस पर वे हृदय से विश्वास करते थे और तदनुसार आचरण भी करते थे। इसलिये नीति के सम्बन्ध में मतभेद होते हुए भी वे देश की इतनी सेवा कर सके, जिसे आज भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा—

यद्यपि आज हमको गाँव-गाँव और गली-गली स्कूल खुले दिखाई पड़ते हैं और लड़के ही नहीं लड़कियों का पढ़ना भी आवश्यक माना जाने लगा है, तो भी संसार के अन्य देशों को देखते हुए हमारे देश में शिक्षितों की संख्या बहुत कम है। योरोप अमरीका के देशों और जापान आदि में भी जहाँ शिक्षितों की संख्या १०० में से ८०, ९० या इससे भी अधिक ९७, ९८ तक हैं वहाँ अभी भारत में आधी जनसंख्या भी पढ़ना-लिखना नहीं जानती। फिर अब से ६० वर्ष पहले, जब श्री गोखले भारतवर्ष में शिक्षा-प्रचार का आन्दोलन कर रहे थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उसके लिये कानून बनाने का सरकार से आग्रह कर रहे थे, भारतवर्ष में शिक्षा की क्या अवस्था होगी, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। उस समय देश में पढ़-लिख सकने वाले लोगों की संख्या अधिक से अधिक सात-आठ प्रतिशत मानी जाती थी और स्त्रियों में से एक प्रतिशत भी साक्षर नहीं थीं,

श्री गोखले को अपने देश के इस प्रकार निरक्षर होने का बड़ा खेद था और वे जब तक जीवित रहे शिक्षा का अधिकाधिक प्रचार करने में अपनी शक्ति लगाते रहे। उन्होंने सरकार के सामने देश में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रस्ताव रखा और इसके लिये वायसराय की कौंसिल में एक 'बिल' (मसौदा) भी पेश किया। वे इसका प्रचार करने के लिये इङ्गलैण्ड भी गये और वहाँ बड़ी-बड़ी सभायें करके अँगरेज जनता को बतलाया कि 'अभी भारत में चार लड़कों में से एक लड़के के पढ़ने की भी व्यवस्था नहीं है और पाँच-छः गाँवों में से एक में स्कूल पाया जाता है।' उन्होंने बड़े जोर से यह कहा कि "भारत में लगभग डेढ़ सौ वर्ष से अँगरेजों का शासन रहने पर भी अभी सौ में से ९२-९३ व्यक्ति पढ़-लिख सकने में असमर्थ हैं यह उनके लिये अपयश की बात है।" इंगलैण्ड के अनेक नेताओं ने श्री गोखले की बात को ठीक बतलाया और तत्कालीन शासकों पर शिक्षा की वृद्धि करने के लिये दबाव डाला।

पर जब श्री गोखले द्वारा पेश किया हुआ 'बिल' प्रान्तीय सरकारों के पास सम्मति के लिये भेजा गया तो सिवाय मद्रास को छोड़कर शेष सब प्रांतों की सरकारों ने उसके विरुद्ध मत दिया। उनका कहना था कि अभी सरकार के पास इतना धन और साधन नहीं हैं जिससे वह शिक्षा का इतना विस्तार कर सके। इस प्रकार यद्यपि उनका यह प्रथम प्रयत्न असफल हुआ तो भी इससे सभी उच्च अधिकारियों को शिक्षा-प्रचार के सम्बन्ध में कुछ अधिक प्रयत्न करने की प्रेरणा मिली और देश में स्कूल और विद्यार्थियों की शिक्षा में निरन्तर वृद्धि होने लगी। श्री गोखले के प्रयत्नों की प्रशंसा करते हुए उस समय एक विद्वान् ने लिखा था कि "श्री गोखले के 'बिल' के पास न होने से हमको निराश नहीं होना चाहिये। लोगों ने उसकी आवश्यकता को स्वीकार कर लिया है प्रश्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केवल साधनों की कमी का है। हमको आशा है कि वह दिन दूर नहीं है जब देश में प्राइमरी (आरम्भिक) शिक्षा अनिवार्य कर दी जायगी। श्री गोखले के प्रयत्न से ऐसी स्थिति के समीप आने में बहुत सहायता मिली है और कुछ समय बाद जब इस प्रकार की शिक्षा-व्यवस्था हो जायगी तो वे जन-शिक्षा के बहुत बड़े 'पुरस्कर्ता' माने जायेंगे इसमें सन्देह नहीं।'

दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की सहायता--

इस समय दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतवासियों की समस्या विशेष रूप से कठिन होती जा रही थी। ये लोग आरम्भ में तो शर्तबन्द मजदूर के रूप में वहाँ गये थे, पर बाद में वहीं बस गये और स्वतन्त्र रूप से खेती का धन्धा अथवा छोटी-बड़ी दुकानें करके उन्होंने बहुत कुछ उन्नति कर ली। वे वहाँ के गोरे निवासियों की अपेक्षा अधिक परिश्रमी और मितव्ययी थे, इसलिये उनकी उन्नति से गोरों को ईर्ष्या होने लगी। वे उनको हर तरह से तङ्ग करने लगे और ऐसे कानून बनाने लगे जिससे उनकी प्रगति रुक जाय। उदाहरण के लिये उनको सार्वजनिक उपयोग के लिये बनाये गये फुटपाथों (सड़क की पटरियों) पर चलने से रोका जाता था, वे ट्राम अथवा रेल के उच्च श्रेणी के डिब्बों में सफर नहीं कर सकते थे, अनेक नगरों में उनको अछूतों की तरह पृथक बस्तियों में ही रहने के लिये बाध्य किया जाता था। अनेक स्थानों में उनको अपना परिचय देने के लिये कैदियों की तरह 'पास' रखना पड़ता था जिस पर उनके अँगूठे और उँगलियों के निशान छापे जाते थे। भारतवासियों के विवाहों को यह कहकर कानून विरुद्ध घोषित किया जाता था कि इनमें बहु-पत्नीत्व की प्रथा प्रचलित है जो योरोपियन समाज के विरुद्ध है। इस प्रकार वहाँ पर भारतीयों की विवाहित पत्नियों को 'वेश्या' के तुल्य ठहरा दिया और उनकी सन्तानों को अवैध करार दिया, जिससे वे अपनी पैतृक सम्पत्ति के अधिकारी नहीं हो सकते थे। उनके लड़कों की शिक्षा के लिये कोई व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि गोरे लोगों के स्कूलों में पढ़ सकने का उनको अधिकार न था।

इस प्रकार उस समय दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतवासियों की दशा लगभग दासों की-सी हो रही थी। वहाँ बड़े से बड़े शिक्षित भारतीय को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'कुली' कहकर पुकारा जाता था। लोग आश्चर्य से पूछते थे कि जब दक्षिण अफ्रीका ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है और भारतवासी भी उसी की प्रजा हैं तो उनके साथ ऐसा भेदभावपूर्ण और विदेशियों की अपेक्षा भी गर्हित व्यवहार क्यों किया जाता है ? सरकार के अन्याय के विरुद्ध जब भारतवासी आन्दोलन और हड़ताल आदि करते थे तो उनके प्रमुख स्त्री-पुरुषों को पकड़कर जेल में भेज दिया जाता था। जब इन घटनाओं का समाचार भारत में आया और समाचार-पत्रों में अपने प्रवासी भाइयों की सहायता के लिये अपील की गई तो यहाँ भी हलचल मच गई। भारत के जिन नेताओं ने अपने इन अभागे भाइयों की दुर्दशा और कष्टों की तरफ ध्यान दिया उनमें श्री गोखले सर्वप्रथम और प्रमुख थे। उस समय दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के प्रधान नेता महात्मा गाँधी ही थे जो वहाँ सत्याग्रह आन्दोलन करके कई बार जेल जा चुके थे। वे श्री गोखले पर बहुत अधिक श्रद्धा रखते थे और उनको अपना 'राजनीतिक गुरु' मानते थे। उन्होंने गोखले जी से प्रार्थना की कि वे एक बार स्वयं दक्षिण अफ्रीका आकर वहाँ के भारतवासियों की दशा का निरीक्षण करें और उनके कष्टों को मिटाने का उपाय बतलायें।

यद्यपि उस समय श्री गोखले का स्वास्थ्य ठीक न था, बहुमूत्र के रोग के कारण वे प्रायः कष्ट पाते रहते थे, तो भी सन् १९१२ में इंगलैण्ड यात्रा के बाद वे अफ्रीका भी पहुँचे। श्री गोखले की योग्यता को देखकर और उनके प्रभावशाली भाषणों को सुन दक्षिण अफ्रीका के गोरे आश्चर्यचकित रह गये। वे सोचने लगे कि जिस देश में ऐसे विद्वान् और बड़े से बड़े अँगरेज के समान प्रतिभाशाली व्यक्ति पैदा हो सकते हैं, वहाँ के निवासियों को दास या गुलाम समझना कहाँ तक युक्तिसंगत है ? अफ्रीका के प्रत्येक नगर में उनका स्वागत किया गया और वहाँ की म्युनिसपैलिटियों के मेयरों (अध्यक्षों) ने उनको अभिनन्दन-पत्र दिये। वे वहाँ के राष्ट्रपति जनरल बोथा और प्रधानमन्त्री जनरल स्मट से मिले और भारतवासियों की शिकायतों के सम्बन्ध में उनसे बातचीत की। वे दोनों भी उनसे बहुत प्रभावित हुए और भारतवासियों के साथ न्याय करने का आश्वासन दिया। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों ने तो गोखले जी को एक 'देवदूत' ही समझ लिया और अनगिनती अभिनन्दन-पत्र तथा 'कास्केट'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(अभिनन्दन-पत्र रखने के सोने-चाँदी के पात्र) भेंट करके अपनी श्रद्धा-भक्ति का प्रदर्शन किया।

श्री गोखले के भारत लौट आने के पश्चात् दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने उनके साथ किये गये समझौते का अर्थ का अनर्थ करने की चेष्टा की, इस पर गोखले जी ने भारत सरकार पर दबाव डाला, जिससे यहाँ के वायसराय लार्ड हार्डिञ्ज ने अफ्रीका के गोरे शासकों को कड़ी चेतावनी दी और भारतवर्ष के एक बड़े अँगरेज अफसर सर बेंजमिन राबर्टसन की अध्यक्षता में एक जाँच कमेटी नियुक्त की जो इन प्रवासी भारतीयों की समस्या की पूरी जाँच करे। इस प्रकार उस समय श्री गोखले के प्रयत्नों से दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की दशा में कुछ सुधार हुआ और कई बहुत अन्यायपूर्ण कानूनी नियम हटा दिये गये। पर वे गोरे अपने हृदय में भारतवासियों के प्रति जो दुर्भावना रखते हैं और उनकी उन्नति से ईर्ष्या करते हैं, वह बात ज्यों की त्यों ही बनी रही। इससे वहाँ बार-बार यह समस्या भिन्न-भिन्न रूपों में उठती रही और आज भी वहाँ की सरकार अपनी रंग-भेद सम्बन्धी पक्षपातपूर्ण नीति के लिये संसार भर में बदनाम है। इस समय भी स्वतन्त्र भारत की सरकार को 'राष्ट्रसङ्घ' में तथा निजी तौर पर भी उसका विरोध करना पड़ रहा है और वहाँ के प्रवासी भारतवासी उसके अन्यायपूर्ण कानूनों की शिकायत करते ही रहते हैं।

भारत-सेवक समाज की स्थापना—

अपने जीवन के अन्तिम दस वर्षों में श्री गोखले ने अपनी बहुत-सी शक्ति एक ऐसी संस्था के निर्माण में लगाई जो उनके जीवन-कार्य को उनके पश्चात् भी जारी रख सके। इस संस्था में वे कुछ ऐसे सुयोग्य नवयुवकों को भरती करना चाहते थे जो जीवन-निर्वाह के लिये साधारण व्यय लेकर अपना समस्त समय और शक्ति समाज-सेवा के कार्यों में लगाते रहें। यह विचार उनके हृदय में बहुत दिनों से उठ रहा था। सन् १८९७ में जब वे पहली बार विलायत गये थे तो उन्होंने वहाँ 'जेसुइट' ईसाइयों की 'सोसाइटी आफ जेसस' जैसी संस्थाएँ देखी थीं जिनके सदस्यों का एकमात्र जीवन-कार्य ईसाई-धर्म का प्रचार करना था। उसी प्रकार श्री गोखले भी कार्यकर्त्ताओं का एक ऐसा दल बनाना चाहते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



थे जो केवल देश और समाज का ही ध्यान रखे और इसी काम को करे। जब जून १९०४ में वे कालेज के काम से बिल्कुल छुटकारा पा गये और उन्होंने 'दक्षिण एजूकेशन सोसाइटी' भी छोड़ दी तब वे इस संस्था के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे। जून १९०५ में "सरवैण्ट आफ इंडिया सोसायटी" (भारत-सेवक-समाज) के भवन का शिलारोहण स्वर्गीय शिवराम हरीराम साठे द्वारा कराया गया। सोसाइटी के घोषणा-पत्र में उसके उद्देश्यों पर विचार करते श्री गोखले ने लिखा था।

"थोड़े समय से देश के कुछ सच्चे सेवकों के हृदय में यह विचार उत्पन्न हो रहा था कि अब हमारे राष्ट्रीय-जीवन में ऐसा अवसर आ पहुँचा है, जब समाजोन्नति के कार्य को सन्तोषजनक ढङ्ग से पूरा करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्त्ताओं के एक दल का निर्माण किया जाय इसमें सन्देह नहीं कि अब तक भी जो काम किया गया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। पिछले पचास वर्षों में एक प्रकार की परम्पराओं, एक प्रकार की आशाओं और आकांक्षाओं के आधार पर जिस राष्ट्रीय भावना का उद्भव हुआ है वह किसी दृष्टि से साधारण नहीं कही जा सकती। यह तथ्य कि हम पहले भारतीय हैं और हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि बाद में हैं, निरन्तर दृढ़ होता जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप एक संयुक्त और नवीन भारत का विचार, जो कि संसार की अन्य जातियों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहा है, दिन पर दिन जोर पकड़ता जाता है। अब यह विचार कुछ कल्पनाशील व्यक्तियों का स्वप्न ही नहीं रह गया है वरन् अब इसने देश के समीप सुशिक्षित लोगों के सिद्धान्त का रूप ग्रहण कर लिया है। इस दिशा में शिक्षा-संस्थाओं तथा स्थानीय शासन (म्युनिसपैलिटी जिला बोर्ड आदि) के रूप में एक महत्त्व-पूर्ण शुभारम्भ किया जा चुका है और सब श्रेणियों के लोग उदार विचारों से प्रभावित होते जाते हैं।

"कांग्रेस और कांफरेंसों के वार्षिक अधिवेशन, सार्वजनिक सभा और संस्थाओं के कार्य, भारतीय समाचार पत्रों के लेख—सब इस बात को प्रकट कर रहे हैं कि देश में एक नव-जागरण का श्री गणेश हो रहा है। अब तक इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो परिणाम निकला है वह गर्व करने लायक है पर इसका आशय इतना ही है कि जङ्गल साफ कर दिया गया है और नींव रख दी गई है। पर उसके ऊपर राष्ट्रीय-जीवन के विशाल भवन का निर्माण अभी आरम्भ करना है। इस अवस्था में कार्य कर्त्ताओं का सच्ची लगन और बलिदान के भाव से कार्य में लगना अत्यावश्यक है।

'भारत-सेवक-समाज' की स्थापना इन्हीं आवश्यकओं की किसी सीमा तक पूर्ति करने के लिए हुई है। ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वराज्य का अधिकार प्राप्त करके अपने देशवासियों के लिए उच्च-जीवन की सम्भावनायें प्राप्त करना उनका लक्ष्य है। हमारा विश्वास है कि यह लक्ष्य बिना अनेक वर्षों तक सचाई और धैर्य के साथ प्रयत्न किये प्राप्त नहीं हो सकता। अभी तो हमको अपने देशवासियों में ऐसा ऊँचे दर्जे का चरित्र और योग्यता उत्पन्न करनी है जिसका वर्तमान समय में बहुत कम दर्शन होता है।

"यह मार्ग अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ है। समय-समय पर कर्त्तव्य विमुख होकर अन्य मार्ग पर चलने के प्रलोभन आते रहेंगे और बीच-बीच में ऐसी निराशाजनक स्थिति का भी सामना करना पड़ेगा, जिससे आन्तरिक श्रद्धा की जड़ हिल जायगी। पर जो व्यक्ति लक्ष्य पर दृढ़ रह कर आगे बढ़ते जायेंगे उनको सफलता प्राप्त होना सुनिश्चित है। अब मुख्य आवश्यकता इसी बात की है कि हमारे देशवासी काफी संख्या में तैयार होकर इस कार्य को वैसी ही श्रद्धा के साथ आरम्भ करें जैसी श्रद्धा से धार्मिक कार्य किये जाते हैं। जन-जीवन को अवश्य ही अध्यात्म की ओर मोड़ना होगा। देश प्रेम को हृदय में इस प्रकार भरना होगा कि उनके सामने अन्य सब चीजें छोटी दिखाई पड़ें। जो देश-सेवक इस पवित्र कार्य को ऐसी उच्च-भावना से आरम्भ करें उनको देशोद्धार के लिए सदैव अपने स्वार्थ का बलिदान करने को तैयार रहना चाहिये और कैसा भी सङ्कट या कठिनाई सामने आये कभी पीछे पैर हटाने का विचार नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति इन गुणों से युक्त होकर इस भगवत्-कार्य में संलग्न होंगे वे ही उस आनन्द का अनुभव कर सकेंगे जो किसी को देश और समाज की निःस्वार्थ सेवा के फलस्वरूप प्राप्त होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

" 'भारत-सेवक समाज' उन व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करेगी जो धर्म-भावना से अपना जीवन समाज और देश की सेवा के लिये अर्पित करने का निश्चय करेंगे। इस संस्था के सदस्य मुख्य रूप से अपनी भक्ति इन कार्यों के लिये व्यय करेंगे—

१—देश के जन-जीवन को उन्नत बनाने के लिये राजनीतिक शिक्षण और आन्दोलन की व्यवस्था करना।

२—देश की विभिन्न जातियों और सम्प्रदायों में एक्य और प्रेम भाव का सम्बर्धन।

३—शिक्षा-प्रचार में सहायता देना, विशेषतया स्त्री-शिक्षा, अछूतों की शिक्षा और औद्योगिक तथा वैज्ञानिक शिक्षा।

४—दलित जातियों को ऊँचा उठाना।"

श्री गोखले इस संस्था के सबके पहले सदस्य थे और उन्हीं को इसमें अन्य सदस्य दाखिल करने का अधिकार था। उनके पश्चात् यह अधिकार तीन व्यक्तियों की एक कमेटी को दिया गया। जिनमें से एक अध्यक्ष और दूसरा मंत्री होता था। संस्था में सम्मिलित होने वाले उम्मेदवारों को सुशिक्षित होना आवश्यक था। पर सबसे अधिक ध्यान उसके कार्यक्षम, दृढ़ चरित्रवान् और पूर्ण उत्साही होने पर दिया जाता था। सामान्यतः प्रत्येक सदस्य को पाँच वर्ष तक प्रशिक्षण ग्रहण करना पड़ता था। इनमें से पहले दो-तीन वर्ष तक तो उसे इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और उन विशेष विषयों का, जिनकी उसके भावी कार्यक्रम के लिये आवश्यकता हो, प्रशिक्षण नियमित रूप से ग्रहण करना पड़ता था। इसके पश्चात् उसे संस्था के विभिन्न केन्द्रों में से किसी एक में भेज दिया जाता था ताकि वह वहाँ रहकर वास्तविक कार्य-पद्धति को देख सके और उसका अभ्यास कर सके।

प्रायः इस पाँच वर्ष की अवधि को घटा भी दिया जाता था और उम्मेदवार शीघ्र ही 'पूर्ण-सदस्य' बना लिया जाता था। सदस्यों के निर्वाह का व्यय संस्था की तरफ से दिया जाता था जो सन् १९०५ में उम्मेदवारों के लिये प्रतिमास ३०) रुपये और 'पूर्ण सदस्यों' के लिये ५०) रुपये नियम किया गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था । सदस्यों का जीवन-बीमा भी करा दिया जाता था और जिनके साथ बच्चे होते थे उनको पढ़ाई-लिखाई के लिये कुछ विशेष सहायता दी जाती थी । सदस्यगण इसके सिवा अगर अध्यक्ष की अनुमति से कोई धनोपार्जन का कार्य करते, तो वह सब आमदनी संस्था के कोश में जमा की जाती थी । अधिकांश सदस्य साधारणत: अपने कार्यक्षेत्रों में रहकर कार्य करते थे, पर प्रति वर्ष दो-तीन महीने के लिये पूना आकर मुख्य-कार्यालय में इकट्ठे भी रहते थे । पूना की केन्द्रीय संस्था में सदस्यों के निवास के लिये सुविधाजनक 'क्वार्टर' बने हुए थे और एक बढ़िया लायब्रेरी थी जिसमें राजनीति और अन्य विषयों की पुस्तकों का उत्तम संग्रह था ।

इस संस्था के सदस्य समाज-सेवा के कौन-कौन से कार्य करते थे ? यह इसकी आरम्भिक रिपोर्टों से विदित हो सकता है । जब संयुक्त प्रान्त में अकाल पड़ा तो वहाँ अकाल-पीड़ितों के लिये सहायता-कार्य का सङ्गठन करने को कई सदस्य भेजे गये । उसके बाद अहमदनगर जिले में इसी प्रकार अकाल पीड़ितों की सहायता का कार्य किया गया । दूसरा विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य 'कोआपरेटिव सोसाइटी' (सहयोग समितियों) की स्थापना का था, जिनके द्वारा छोटे उद्योग-धन्धों के विकास में सहायता पहुँचाई जा सके । इससे अनेक बेकार लोगों को जीविका का साधन प्राप्त होता था । बम्बई में दलित जाति वालों को ऋण से छुड़ाने के लिये भी बहुत काम किया गया था । सन् १९१६ में हरिद्वार के कुम्भ पर कुछ सदस्यों ने सेवा समिति के रूप में सेवा-कार्य का संगठन किया जिसमें बहुसंख्यक स्वयं सेवकों ने यात्रियों की अनेक प्रकार से सहायता की । इसी प्रकार और भी समाज-सेवा के अनेक कार्य इसके सदस्य विभिन्न स्थानों पर समय-समय पर किया करते थे । इन कार्यों में वे जहाँ आवश्यकता पड़ती थी सरकारी अधिकारियों की सहायता भी लेते थे ।

'भारत-सेवक समाज' ही श्री गोखले का सच्चा और ठोस स्मारक है जो वर्षों से विभिन्न प्रकार से जनता की सेवा और उसकी उन्नति के प्रयत्नों में संलग्न है । 'समाज' का दूसरा कार्यक्षेत्र विशुद्ध राजनैतिक था, जिसका उद्देश्य देश के राजनीतिक अधिकारों में निरन्तर वृद्धि करने की चेष्टा करना था ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज की तरफ से दो-एक अखबार भी प्रकाशित किये जाते थे जिनका उद्देश्य भारतीय राजनीतिक आन्दोलन में सहायता पहुँचाना था।

'रानाडे इकोनौमिक इन्स्टीट्यूट'—

फर्गुसन कालेज और भारत-सेवक-समाज के पड़ोस में ही श्री गोखले द्वारा स्थापित तीसरी संस्था 'रानाडे इकोनौमिक इन्स्टीट्यूट' की है। जब सन् १९०१ में श्री रानाडे की मृत्यु हुई तो देश के विभिन्न भागों में उनकी स्मृति के लिये कोई महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य किये जाने का उद्योग होने लगा। इसके लिये श्री गोखले ने एक लाख रुपये के लगभग चन्दा इकट्ठा करके पूना में इस नई संस्था की स्थापना की। इसके दो विभाग रखे गये। एक तो आर्थिक विषयों से सम्बन्धित एक लायब्रेरी स्थापित करके उसमें भारतीय आर्थिक समस्याओं का अध्ययन और मनन करने की व्यवस्था करना था। दूसरा एक ऐसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित करना था जिसमें देश के उद्योग-धन्धों के विकास के लिये खोज-कार्य और उपयोगी वैज्ञानिक आविष्कारों के सम्बन्ध में कार्य किया जाय।

पर चूँकि श्री गोखले स्वयं वैज्ञानिक नहीं थे, इसलिये वे यह नहीं समझ सके कि इस प्रकार की वैज्ञानिक खोज का कार्य कितना विस्तृत है और उसमें कितने अधिक व्यय की आवश्यकता होती है? इस कारण प्रयोगशाला के निर्माण का कार्य बहुत धीरे-धीरे हो सका और सन् १९१० में उसे पूरा करके बम्बई के गवर्नर से उसका उद्घाटन कराया। उसमें रहकर दो-तीन विज्ञान के ग्रेजुएट उद्योग-धन्धों में काम आने वाली कुछ सामान्य वस्तुओं के विषय में शोध करके उसका लाभ भारतीय उद्योग-धन्धों को पहुँचाते रहते थे।

उदाहरण के लिये आरम्भिक वर्षों में उन्होंने कुछ ऐसे पदार्थों की जाँच की जिनसे सीमेण्ट अच्छा और अधिक परिमाण में बनाया जा सके। फिर चमड़ा कमाने के पदार्थों की खोज के सम्बन्ध में भी कुछ काम किया। फिर भी यह काम विशेष सफल इसलिये न हो सका क्योंकि इसके लिये जिन बड़े-बड़े यन्त्रों, नवीन वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है तथा निरन्तर परीक्षण करने में जितनी सामग्री नष्ट होती है, उसकी व्यवस्था कोई साधारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आर्थिक साधनों वाली निजी संस्था नहीं कर सकती। तो भी उस जमाने में, जब कि भारतवासी आधुनिक उद्योग-धन्धों से अपरिचित थे और साबुन, दियासलाई, कलम, दवात जैसी छोटी-छोटी चीजें भी विदेशों से ही खरीदकर आती थी, इस प्रकार का कार्य जनता में औद्योगिक प्रगति की दृष्टि से प्रेरणा और प्रोत्साहन देने वाला तो था ही।

काँग्रेस सम्बन्धी कार्य--

सन् १९०७ में सूरत-काँग्रेस के अवसर पर काँग्रेस प्रतिनिधियों में राजनीतिक कार्य-क्रम के सम्बन्ध में जो मतभेद और सङ्घर्ष हुआ उससे वे दो भागों में विभाजित हो गये—माडरेट (नर्मदल) और एक्स्ट्रीमिस्ट (गर्मदल)। पहले दल का उद्देश्य सरकार के साथ मिलकर और वैध ढङ्ग से आन्दोलन करके क्रमशः स्वराज्य का अधिकार प्राप्त करना था। दूसरा दल प्रत्येक विषय में सरकार पर आक्षेप करके और जनता को उसके विरुद्ध भड़का कर जल्दी से जल्दी स्वराज्य प्राप्त करने के पक्ष में था। श्री गोखले नर्मदल के नेता थे और सूरत के अधिवेशन के पश्चात् आठ-नौ वर्ष तक काँग्रेस पर उन्हीं के दल का अधिकार रहा। उन्होंने काँग्रेस के सङ्गठन को दृढ़ आधार पर स्थापित करने का प्रयत्न किया। उस समय तक काँग्रेस अधिवेशन से कुछ समय पहले विभिन्न नगरों में सार्वजनिक सभाएँ करके प्रतिनिधियों का चुनाव कर लिया जाता था। इसके लिये कोई नियम और सिद्धान्त नहीं थे। जो कोई प्रतिनिधि शुल्क देने को तैयार होता वही प्रतिनिधि चुन लिया जाता था।

श्री गोखले ने काँग्रेस संगठन को स्थायी और प्रभावशाली बनाने के लिये उसके प्रान्तीय, जिला और तालुका कमेटियाँ निर्माण करने का नियम बनाया। स्थायी काँग्रेस सदस्य बनाने और काँग्रेस की नियमावली के अनुसार कार्य करने पर भी जोर दिया जिससे देशोन्नति की भावना वाले व्यक्ति ही उसमें भाग ले सकें। अन्यथा यह भय था कि विरोधी दल' के लोग किसी प्रकार की चाल से उस पर अधिकार कर लेने अथवा हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे। फिर भी सन् १९०८ से ही दोनों दलों में समझौते की आवाज उठती रही। निष्पक्ष मनोवृत्ति के देश सेवक इस प्रकार की फूट को हानिकारक मानते थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और यह चेष्टा करते रहते थे कि सब लोग एक कार्यक्रम को अपनाकर सरकार के सामने संयुक्त रूप से स्वराज्य की माँग रखें।

श्री गोखले भी इस आवश्यकता को समझते थे और ऐसी चर्चा चलने पर उसके लिये प्रस्तुत रहते थे। सन् १९१४ में जब श्री तिलक मांडले जेल से छूट कर आये तो इस समझौते की चर्चा ने अधिक जोर पकड़ा और काँग्रेस के मद्रास अधिवेशन पूर्ण श्रीमती ऐनीबेसेन्ट और श्री सुब्बाराव ने पूना आकर उनसे बात चीत की, पर कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। उस समय श्री गोखले बीमार थे इसलिये वे स्वयम् काँग्रेस में भाग नहीं ले सके पर उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना एक वक्तव्य लिखकर काँग्रेस के अधिवेशन में भेज दिया। इसके डेढ़-दो महीने बाद ही उनका देहान्त हो गया और जब तक उनका सम्बन्ध था यह प्रश्न सदैव के लिये समाप्त हो गया।

स्वास्थ्य और अन्तिम बीमारी—

श्री गोखले का स्वास्थ्य आरम्भिक जीवन में काफी मजबूत था और वे प्रायः टेनिस और क्रिकेट जैसे शक्ति-वर्द्धक खेल खेला करते थे। उस समय वे बहुत अधिक मानसिक कार्य कर लेते थे और बहुत थोड़ी देर सोकर काम चला लेते थे। विशेष आवश्यकता पड़ने पर वे रात भर जगते रह जाते थे और सुबह होने से पहले अपने भाषणों अथवा अन्य लेखों को तैयार कर लेते थे। 'दक्खिन एजूकेशन सोसाइटी' के लिए चन्दा इकट्ठा करने का काम करते हुए उनको बहुत अधिक शारीरिक भार उठाना पड़ा। उसके पश्चात् राजनीतिक कार्य इतना अधिक बढ़ गया कि उनके नियमित व्यायाम में भी बाधा पड़ने लगी। इस व्यायाम सम्बन्धी लापरवाही का परिणाम शरीर पर शीघ्र ही मालूम पड़ने लगा। इसके सिवाय सन् १८९७ में जब वे इंगलैण्ड जा रहे थे तो एक दुर्घटना हो जाने से उनके हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ा और वह जीवन के अन्तिम समय तक प्रकट होता रहा। शिक्षित भारतवासियों में जो सत्यानाशी व्याधि आमतौर से देखने में आती है, वह बहुमूत्र की बीमारी भी उनको लग गई।

उन्होंने बहुमूत्र की बीमारी के लिये अनेक प्रकार के इलाज किये, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह पूर्णरूप से कभी नहीं मिट सकी। इसका एक कारण यह भी था कि वे प्रायः कार्यों को नियमपूर्वक नहीं कर पाते थे। पत्रों के उत्तर देने का कार्य देर तक पड़ा रह जाता और जब थोड़ा समय रह जाता तो डाक निकल जाने के भय से उनका उत्तर बड़ी शीघ्रतापूर्वक लिखने लगते। यद्यपि अपने दृढ़ मनोबल से वे सब कामों को पूरा कर लेते थे, पर इससे शरीर पर आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ता था। इन सब बातों के अतिरिक्त वे बड़े भावुक थे, किसी प्रकार के आक्षेप से उनकी मानसिक शान्ति भंग हो जाती थी और वे बड़ी देर तक उसी की चिन्ता में लगे रहते थे। सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और नेताओं के लिए यह एक हानिकारक मनोवृत्ति है क्योंकि उन पर प्रायः विरोधियों द्वारा ऐसे आक्रमण होते ही रहते हैं। उनके मित्रों ने उनको अनेक बार समझाया कि वे ऐसे छोटे-मोटे विषयों पर चिन्ता न किया करें, पर वे अपनी पुरानी आदतों को न त्याग सके और इसका उनके स्वास्थ्य पर निश्चित रूप से बुरा प्रभाव पड़ा।

बीच-बीच में उनको स्वास्थ्य सुधारने का ख्याल अवश्य आजाता था और तब वे कई सप्ताह तक टेनिस खेलना या पहाड़ियों में दूर तक भ्रमण करना आरम्भ कर देते थे। पर उनका यह आकस्मिक उत्साह कार्याधिक्य से कुछ समय बाद समाप्त हो जाता था। उनका बहुमूत्र का रोग कभी-कभी बहुत बढ़ जाता था। इसके लिए उन्होंने उसके सम्बन्ध में बहुत सी किताबें पढ़ी थीं और इसका परिणाम यह हुआ कि जब तक किसी इलाज की उपयुक्तता के सम्बन्ध में उनको पूरा विश्वास न हो जाता तब तक वे उसको स्वीकार ही नहीं करते थे। इससे उनके डाक्टरों को उनकी चिकित्सा करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। इंगलैंड की यात्रा के समय उनको अनिद्रा रोग की शिकायत हो गई। उस समय कई मित्रों ने उनकी बड़ी सेवा की जिससे उनका स्वास्थ्य भारत तक की यात्रा कर सकने योग्य हो सका। यहाँ आकर वे फिर 'रायल कमीशन' के कार्य को पूरा करने में लग गये जिससे रोग फिर उमड़ आया।

वास्तव में श्री गोखले उन महापुरुषों में से थे जिनको मरना और जीना बराबर जान पड़ता है और जो अपने कर्त्तव्य-पालन के सामने इसकी कुछ भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चिन्ता नहीं करते। वे मृत्यु शैय्या पर पड़े थे और डाक्टरों ने उनके जीवन की आशा त्याग दी थी, तो भी वे १८ फरवरी की शाम तक बिस्तर पर पड़े-पड़े आवश्यक पत्रों के उत्तर लिखते रहे। १९ तारीख को सुबह उनको अपनी हालत अधिक गिरती हुई जान पड़ी। इसलिए उन्होंने अपने मित्रों, बहिनों, दोनों लड़कियों को पास बुलाकर उनसे अन्तिम विदा ली, अपने निजी कार्यों के विषय में आवश्यक सूचनायें दीं और तब कहने लगे कि—"मैंने इस दुनियाँ का हाल-चाल तो इतने समय तक देख लिया अब दूसरी दुनियाँ का भी हाल देखना चाहिये। यह कहकर वे दिन के ग्यारह बजे शान्ति के साथ परम पिता की गोद में चले गये। अन्तिम समय में उनको केवल 'भारत-सेवक-समाज' का ही ध्यान था जिसको उन्होंने निजी पुत्र की अपेक्षा भी अधिक स्नेह किया था।

श्री गोखले की सन्तानों में केवल दो पुत्रियाँ ही थीं। इसके सिवाय उनके भाइयों और बहिनों के भी बहुत से लड़के बच्चे थे जिन सबकी अपने जीवन काल में वे यथाशक्ति सहायता करते रहे और मरते समय भी जो कुछ उनके पास था उसमें से थोड़ा-थोड़ा दे गये। इसके सिवाय उन्होंने अपने समस्त साधनों को सदैव मातृभूमि की सेवा और उन्नति के लिये ही व्यय किया। वे इस प्रकार की सार्वजनिक हित की समस्याओं में प्रायः इतने निमग्न हो जाते थे कि अपने आवश्यक कामों का ध्यान भी नहीं रहता था। ऐसे अवसर पर यदि कोई उनके पास जाकर उनके ध्यान को भङ्ग कर देता था तो वे उस पर बिगड़ उठते थे। पर वैसे उनका स्वभाव बहुत मधुर था, इसलिये थोड़ी ही देर में नाराजगी दूर हो जाती थी और वे सद्भावपूर्ण वार्तालाप से उसे प्रसन्न कर देते थे। कभी-कभी तो वे अपने नौकरों तथा आश्रितों से ऐसी कड़ी बातों के लिये क्षमा-प्रार्थना भी कर लिया करते थे।

आर्थिक मामले में वे बड़े सावधान रहते थे, क्योंकि उन्होंने आरम्भ से ही देश के लिये लाभ और बलिदान किया था और अपना काम थोड़े से खर्च में बड़ी मितव्ययिता से चलाया था। जो लोग इस आधार पर उनको कंजूस समझते थे, वे बड़ी भूल करते थे। उन्होंने आरम्भ में ही सैकड़ों रुपया मासिक आमदनी के रोजगारों को छोड़कर देश सेवा की भावना से 'भर्गुसन कालेज' में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

७५ रुपये की प्रोफेसरी स्वीकार की थी और बाद में भी अपना अधिकांश समय तथा शक्ति अभावग्रस्त पीड़ित जनता के उद्धार के कार्यों में ही लगाते रहे। फिर भी वे जो कुछ कमाते थे उसमें से परोपकार के कामों में यथाशक्ति सहायता करते ही रहते थे।

इस सम्बन्ध में उनके विचार स्वतन्त्र थे और इस विषय में वे किसी से वाद-विवाद नहीं करते थे। आरम्भिक दिनों में उनके विचार किसी हद तक नास्तिकता की ओर झुके थे, पर बाद में कुछ परिवर्तन हो गया। कुछ समय तक वे 'थियोसोफी' के सिद्धान्तों का अध्ययन करते रहे और उस समाज में जाते भी थे, पर कभी उनके नियमित सदस्य नहीं बने। वैसे स्वभाव से ही उनमें आध्यात्मिकता की भावना पर्याप्त मात्रा में पाई जाती थी और वे ईश्वर के समान ही अपने 'देश' के पुजारी थे। इसी मनोवृत्ति के कारण वे जापान और उसके निवासियों की बड़ी प्रशंसा करते थे। उन्होंने अनेक बार जापान जाकर यह देखने और समझने की इच्छा प्रकट की, कि उस देश ने बीस-पच्चीस वर्ष के भीतर ही किस प्रकार इतनी उन्नति कर ली ? पर यहाँ के राजनीतिक कार्यों के दबाव से कभी उनको इतना अवकाश ही नहीं मिला और यह आकांक्षा उनके साथ ही चली गई।

इसमें सन्देह नहीं कि श्री गोखले अपने समय के एक महान पुरुष थे और उनकी महानता का आधार यही था कि उन्होंने अपनी शक्तियों का प्रयोग स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ के लिए किया था। वे एक सामान्य स्थिति के परिवार में उत्पन्न हुए थे और उन्होंने जो कुछ उन्नति की थी वह कठोर परिश्रम और लक्ष्य में तल्लीनता के आधार पर ही की थी। यद्यपि वे अच्छे वक्ता, शिक्षा–विशारद और सङ्गठन कर्ता थे, पर उनके समय में उनसे अच्छे वक्ता, शिक्षा-विशारद आदि और भी बहुत से मौजूद थे। गोखले में मातृभूमि की सेवा सर्वोपरि थी और उन्होंने अपनी समस्त शक्तियों को इसी एक लक्ष्य पर केन्द्रित कर दिया, इसीलिये वे महानता का दर्जा पा सके और अपने देशवासियों की दृष्टि में चिरकाल के लिये गौरवास्पद स्थान प्राप्त कर सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री गोखले के जीवन से जो सबसे बड़ी शिक्षा हम प्राप्त कर सकते हैं वह यही है कि चाहे किसी मनुष्य में प्रकृतिदत्त बहुत बड़ी शक्तियाँ या प्रतिभा न भी हो, तो भी उसके स्वभाव तल्लीनता से कार्य में लगे रहने का गुण है और साथ ही वह सचाई और उदारता का भी पालन करता है, तो अवश्य ही साधारण दर्जे से उन्नति करके बड़ी से बड़ी स्थिति को प्राप्त कर सकता है। हमारे अधिकांश भाई जो अपनी निम्नस्थिति का कारण सहायकों का अभाव, दूसरों का विरोध, उपयुक्त मौका न मिलना आदि बतलाया करते है और अपनी दुरवस्था के लिए संसार, समाज या सरकार को दोषी ठहराया करते हैं, वे श्री गोखले के जीवन पर दृष्टिपात करें। वे बिल्कुल सामान्य आर्थिक स्थिति वाले परिवार में जन्मे थे जिसमें कोई मास्टरी या क्लर्की से बढ़कर सफलता की आशा नहीं कर सकता था, उनकी प्रतिभा भी इतनी तीव्र न थी कि दूसरे मेधावी छात्रों से बाजी मार लेते, पर केवल अपनी हार्दिक लगन के बल पर उन्होंने विद्यालय में सफलता प्राप्त की। इसके पश्चात् अगर वे कोई बड़ी सरकारी नौकरी कर लेते या वकालत द्वारा धन कमा लेते तब भी आज उनकी कोई याद नहीं करता। परन्तु उन्होंने उस कठिन अवस्था में भी अपनी योग्यता की शक्ति का उपयोग स्वयम् बड़े बनने के लिये न करके अपने देश और समाज को बड़ा बनाने के लिए किया। क्या हम उनका पदानुकरण करके कुछ महान करके नहीं दिखा सकते ?

18.2.2013

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा, जनजागरण प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों को सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य :



- विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- 3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानकल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- युग-निर्माण योजना के सूत्रधार : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- गायत्री के सिद्ध साधक : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- तपस्वी : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- समाज सुधारक : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- ऋषि परम्परा के उद्धारक : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- अवतारी चेतना : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में समाहित है। - पूज्य गुरुदेव